सेमीनार

Scanned with OKEN Scanner

सेमीनार

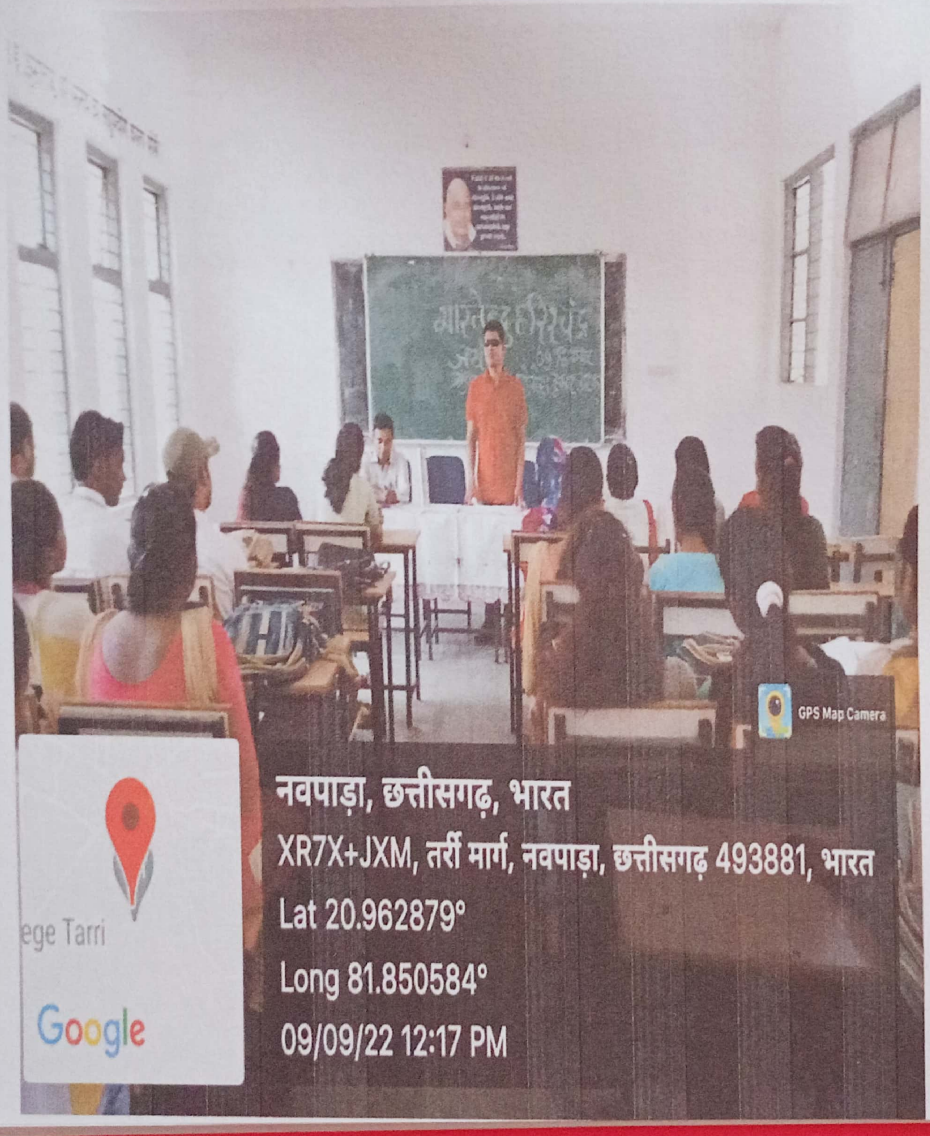

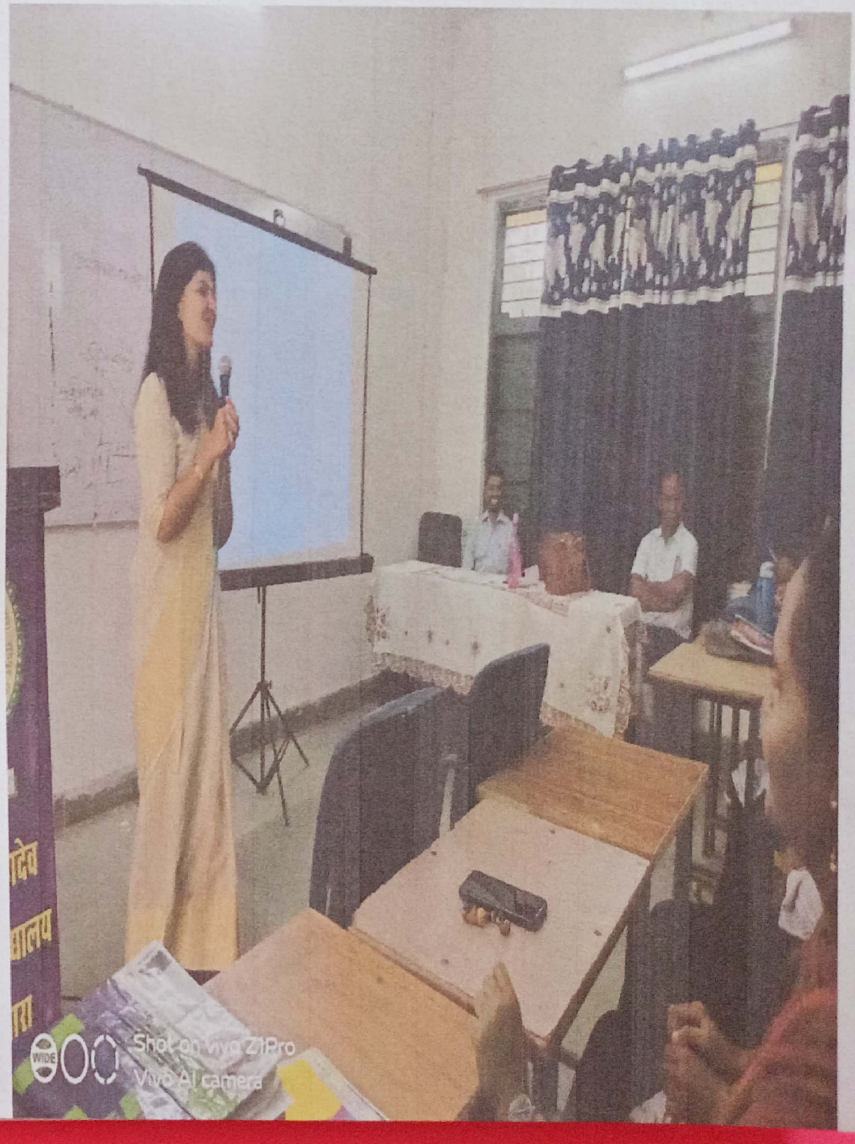

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

कार्यालय प्राचार्य, श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय महाविद्यालय, गोबरा नवापारा,
ग्राम तर्री, पोस्ट पटेवा (व्हाया राजिम–493–885) जिला–रायपुर (छत्तीसगढ़)
Web Site: www.gcgn.in, E-mail : govt.gnr.college@gmail.com

क्रमांक 545/स्था./2022 गोबरा नवापारा, दिनांक 07/09/2022

प्रति,

श्री योगेश कुमार तारक
सहायक प्राध्यापक
श्री राजीवलोचन स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजिम जिला–गरियाबंद (छ.ग.)

हमारे महाविद्यालय में दिनांक 09/09/2022 को भारतेन्दु हरिशचंद जी की जयंती के अवसर पर हिन्दी विभाग द्वारा सेमिनार का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें आप मुख्य वक्ता के रूप में सादर आमंत्रित है।

कृपया इस आयोजन में अपनी उपस्थिति देकर इसे सफल बनावें।

सादर धन्यवाद

(श्री एस.आर.वड्डे)
प्र.प्राचार्य
श्री कुलेश्वर महाविद्यालय गोबरा–नवापारा जिला–रायपुर
जिला–रायपुर (छ.ग.)

विभागाध्यक्ष

श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय महाविद्यालय

गोबरा नवापारा जिला-रायपुर (छ.ग)

एक दिवसीय कार्यशाला

हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु हरिशचन्द्र का योगदान

09 सितम्बर 2022

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **श्री योगेश कुमार तारक, श्री राजीव लोचन स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजिम** हिन्दी विभाग श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय महाविद्यालय, गोबरा–नवापारा जिला–रायपुर द्वारा भारतेन्दु हरिशचन्द्र की जयंती पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में सम्मिलित हुए।

हम इनके उज्जवल भविष्य की कामना करते है।

श्री पुरूषोत्तम कुमार काबरा
विभागाध्यक्ष

श्री जितेन्द्र कुमार सिन्हा
कला संकाय प्रमुख

श्री एस.आर.वड्डे
प्र. प्राचार्य

Scanned with OKEN Scanner

श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय महाविद्यालय गोबरा नवापारा

// प्रतिवेदन //

वर्तनी लेखन एवं उच्चारण गुणवत्ता में सुधार हेतु कार्यशाला

श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय महाविद्यालय गोबरा नयापारा में आंतरिक गुणवत्ता एवं मूल्यांकन समिति एवं हिंदी विभाग के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 17 सितम्बर 2022 को एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में शासकीय नवीन कन्या महाविद्यालय गोबरा नयापारा के हिंदी की सहायक प्राध्यापक डॉ सरोज चक्रधर उपस्थित थी। कार्यक्रम का शुभारंभ छत्तीसगढ़ के राजकीय गीत 'अरपा पैरी के धार' के साथ हुआ। डॉ. सरोज चक्रधर ने *'देवनागरी लिपि एवं हिंदी वर्तनी का मानकीकरण'* विषय पर व्याख्यान देते हुए बताया कि लिपि का विकास चित्र लिपि, प्रतीक लिपि, भाव लिपि से होते हुए ध्वनि लिपि के रूप में हुआ। ध्वनि चिन्हों का परिचय देते हुए कंठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दंत्य एवं ओष्ठम् आदि वर्गों में विभाजित स्पर्श व्यंजनों का उल्लेख किया इसी को देवनागरी में क्रमशः कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग रखे जाने के विषय मे बताते हुए उन्होंने देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता एवं हिंदी वर्तनी के मानकीकरण के विषय में जानकारी प्रदान की। । डॉ. सरोज चक्रधर ने बताया कि वर्तनी की एकरूपता भी भाषा की शुद्धता के लिए परम आवश्यक है साथ ही उन्होंने संयुक्ताक्षर, पूर्वकालिक प्रत्यय, विभक्ति चिह्न,अव्यय, हायफन, श्रुति रूप,संस्कृत मूलक तत्सम शब्द, अनुस्वार, अनुनासिक, पंचम वर्ण के शुद्ध लेखन एवं शुद्ध उच्चारण की संबंध में उदाहरण सहित विस्तार पूर्वक जानकारी दी। जिससे उच्चारण एवं लेखन की गुणवत्ता में सुधार हेतु उक्त कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

Tabra

विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग

Scanned with OKEN Scanner

कार्यशाला: गोबरा कॉलेज में एक दिवसीय सेमिनार संपन्न

नागर ब्राह्मणों द्वारा प्रचलित होने से पड़ा देवनागरी नाम : सरोज

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

नवापारा-राजिम श्रीकुलेश्वरन महादेव शासकीय महाविद्यालय गोबरा नवापारा में आंतरिक गुणवत्ता व मूल्यांकन समिति व हिंदी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 17 सितम्बर को एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में शासकीय नवीन कन्या महाविद्यालय गोबरा नवापारा के हिंदी की सहायक प्राध्यापक डॉ. सरोज चक्रधर उपस्थित थी। कार्यक्रम का शुभारंभ छत्तीसगढ़ के राजकीय गीत अरपा पैरी के धार के साथ हुआ।

डॉ. सरोज चक्रधर ने देवनागरी लिपि एवं हिंदी वर्तनी का मानकीकरण विषय पर व्याख्यान देते हुए बताया कि लिपि का विकास चित्र लिपि, प्रतीक लिपि, भाव लिपि से होते हुए ध्वनि लिपि के रूप में हुआ। ध्वनि चिन्हों का परिचय देते हुए कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दंत्य व ओष्ठ्य आदि वर्गों में विभाजित स्पर्श व्यंजनों का उल्लेख किया इसी को देवनागरी में क्रमशः क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग और प वर्ग रखे जाने के विषय में बताते हुए उन्होंने देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता एवं हिंदी वर्तनी के मानकीकरण के विषय में जानकारी प्रदान की।

देवनागरी लिपि नामकरण के विषय में उन्होंने बताया गुजरात के नागर ब्राह्मणों द्वारा प्रचलित होने के कारण इसका नाम नागरी रखा गया है। उत्तरी शाखा नागरी का प्रयोग जब देव भाषा संस्कृत के लिए होने लगा तो इस लिपि को देवनागरी लिपि कहा जाने लगा। देवनागरी लिपि का विकास आठवीं सदी में हुआ।

डॉ. सरोज चक्रधर ने बताया कि वर्तनी की एकरूपता भी भाषा की शुद्धता के लिए परम आवश्यक है। साथ ही उन्होंने संयुक्ताक्षर, पूर्वकालिक प्रत्यय, विभक्ति चिह्न, अव्यय, हायफन, श्रुति रूप, संस्कृत मूलक तत्सम शब्द, अनुस्वार, अनुनासिक, पंचम वर्ण के शुद्ध लेखन व शुद्ध उच्चारण के संबंध में उदाहरण सहित विस्तार पूर्वक जानकारी दी। उन्होंने हिं[illegible] अंकों के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास भी विद्यार्थियों को कराया।

इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य एसआर [illegible] प्राध्यापकगण जितेंद्र [illegible] [illegible] पीयूष [illegible] मोनिका साहू, [illegible] साहू, पुष्पलता [illegible] काबरा, अजय पटेल, [illegible] एसआर साहू सहित बड़ी संख्या में महाविद्यालय के विद्यार्थी उपस्थित थे। हिंदी के विभागाध्यक्ष [illegible] काबरा ने डॉ. सरोज चक्रधर का आभार व्यक्त किया।